Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 5328660

Roll No. 24029000612
Total Mark 59/75.00

Exam MASTER OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
Subject A010703T - PRACHEEN EVAM MADHYAKALEEN KAVY

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	4/5						
1C	4/5						
1D	4/5						
1E	4/5						
1F	3/5						
1G	4/5						
1H	4/5						
1I	4/5						
2	NA/15						
3	NA/15						
4	NA/15						
5	12/15						
6	12/15						
7	NA/15						
8	NA/15						
9	NA/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam: 3-1-2025 Shift: I Room No.: 21
Paper Code: A010703T Subject: Hindi Year/Sem: I, Sem
Name of Candidate: Sahastranshu Mishra
Roll No.: 2 4 0 2 9 0 0 0 6 1 2

Signature of Candidate: सहस्रांशु मिश्रा
Signature of Invigilator: Prakash
COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures ______ Max. Marks

Total Marks in Words ______

Paper Code: A010703T

Signature of Evaluator

PART-III

Course: M.A. Hindi
Session: 2024-25 Year/Semester: 1st Sem
Subject Name: Hindi
Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code: A 0 1 0 7 0 3 T

Exam Date: 0 3 0 1 2 0 2 5

Name of Candidate: SAHASTRANSHU MISHRA

Father's Name: RAMLESH KUMAR

महाविद्यालय का कोड
College Code: K N 0 1

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code: K N 0 1

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
संस्थागत Regular ● भूतपूर्व छात्र Ex-Student ○
व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.

5328660

Paper Code: A010703T

PART-IV

नामांकन संख्या
Enrollement Number: C S J M A 2 4 0 0 0 1 1 9 5 6 8

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 2 9 0 0 0 6 1 2

पेपर कोड Paper Code: A 0 1 0 7 0 3 T

Signature of Candidate: सहस्रांशु मिश्रा

Signature of Invigilator: Prakash

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पत्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. पत्रिका में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken thecircles completely.

Correct Method	Incorrect Method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ⓿

4. Make no Stray marks o n this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाइल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों को दिशा निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसकी परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त शाक नहीं दिया जायेगा।

3

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subj Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code

1

खण्ड-अ

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर सं० 1 (A)

हिंदी साहित्य को विद्यापति की देन -

विद्यापति हिंदी साहित्य के उन आरम्भिक कवियों में प्रमुख हैं, जिनके काव्य कौशल से साहित्य की यह सरस धारा आज अविरल रूप से प्रवाहित हो रही है।

शृंगार के ऐसे अनूठे वर्णन जो विद्यापति की पदावली में देखने को मिलते हैं, शायद ही कहीं मिल पाएं। राधा-कृष्ण की स्तुति हो अथवा शिव की आराधना एवं दुर्गा के गीतात्मिक भजन, विद्यापति की अमूल्य निधि आज भी लोक प्रचलित है।

विद्यापति की रचनाएं भी कई भाषाएं समेटकर चली हैं। अवहट्ट हो अथवा लोकभाषाएं अथवा देवभाषा संस्कृत विद्यापति ने अपनी रचनाशक्ति का प्रयोग हर जगह किया है। विद्यापति की रचनाएं इस

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

प्रकार हैं —

कीर्तिलता
कीर्तिपताका } अवहट्ट भाषा

पदावली — मैथिली भाषा

पुरुष परीक्षा
भू परिक्रमा
दान वाक्यावली
दोहा वाक्यावली } संस्कृत

मैथिल कोकिल के नाम से विख्यात विद्यापति साहित्य के तीन स्तंभ के रूप में अग्रगण्य हैं।

(B)

'पृथ्वीराज रासो' के काव्य सौन्दर्य का परिचय -

'पृथ्वीराज रासो' चंदबरदाई द्वारा रचित एक ऐसा महाकाव्य है, जिसने रासो परम्परा के प्रवाह की दिशा को एक सोपान प्रदान किया। रासो ग्रन्थ 'पृथ्वीराज रासो' दरबारी कवि चंदबरदाई ने ऐसे समय पर पूर्ण किया जब पिता तुल्य पालक राजा पृथ्वीराज युद्ध पर थे।

काव्य पक्ष -

रस - चंदबरदाई ने पृथ्वीराज रासो रस परिपाक की योजना का रूपण बहुत कुशलता से किया। भाव, विभाव सचारी भाव का परिपाक द्रष्टव्य है।

छंद - कवित्त तथा सवैये का अद्भुत प्रयोग रासो में किया गया है।

अलंकार - दरबारी कवियों की परंपरा में अलंकार वैशिष्ट्य सदैव महत्वपूर्ण रहे है, अतः दृष्टांत अतिश्योक्ति एवं उपमा का भरपूर प्रयोग किया है। पृथ्वीराज रासो काव्य सौन्दर्य के क्षेत्र में अद्वितीय एवं अनुपम है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

(c)

कबीरदास की भक्ति भावना –

कबीर ऐसे युग प्रर्वतक कवि हैं, जिन्होने वास्तव में साहित्य और समाज के संबंध को स्थापित किया है; कबीर की भक्ति भावना हर रूप में उत्पन्न हुई है; —

माता- पुत्र के रूप में —
हरि जननी मैं बालक तेरा

पति - पत्नी के रूप में —
• राम ~~हरि~~ मोर पिउ
मैं राम की बहुरिया
राम बड़े मैं छुटुक लहरिया।

• दुलहिन गावहु मंगलचार
मोरे घर आए राजा राम भरतार।

कबीर ने ईश्वर की भक्ति सहज रूप में मनोभावो को अभिव्यक्ति करके की है; जब जैसे भाव आए तब वैसा काव्य के होने सृजित किया; कभी [illegible], कभी पत्नी तो कभी [illegible] भाव को प्रकट

किया है।

कबीर कूता राम का,
मोतिया मेरा नाउं;
गले राम की जेवड़ी,
जित खेंचे तित जाउं॥

इस प्रकार कबीर अनन्य भक्ति समझ में आते हैं; जिसे सिर्फ अपने आराध्य के नेह की चाह है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

(0)

जायसी की रचना 'पद्मावत' का संक्षिप्त वर्णन

मलिक मोहम्मद जायसी ने पद्मावत की रचना चित्तौड़ के राजा रावल रतन सिंह की अनुपम सुंदरी पत्नी 'पद्मावती' को आधार बनाकर की है।

- अखरावट
- आखिरी कलाम

जायसी की अन्य रचनाएं: पद्मावत की संक्षिप्त कथा इस प्रकार की है—

चित्तौड़ की दूसरी रानी के रूप में पद्मावती सिंहलद्वीप से वधू रूप में आती है। राजपुरु राघव चेतन को रतन सिंह कानाफ्याद के कारण देश निकाला देते हैं। राघव चेतन अपमान के कारण, प्रतिशोध में आकर दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी से रानी पद्मावती को जीतने के लिए सुंदर वर्णन करता है;

"वह सुंदरी अगर पानी भी पिए तो गले से उतरता दिखाई दे।"

अलाउद्दीन रानी को पाने की चाह में चित्तौड़ पर आक्रमण

Paper Code

कर देता है।

राणा की हार को देखकर रानी अपनी हजारों दासियों/सखियों के साथ इतिहास प्रसिद्ध 'जौहर' कर प्राण-उत्सर्ग कर देती है -

" घेरदार घांघरे

गुलाबी रंग में रांचो सा;

धणी-धणी री धम्मा,

सत में रानी धावै।"

इस महाकाव्य में रहस्यवाद का पुट भी यथास्थान समाहित है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

(E)

~~सूद~~ सूरदास के दार्शनिक विचारों का विवेचन -

• भक्ति के अनन्य कवि प्रज्ञाचक्षु महात्मा सूरदास ने अपने मुखारविंद से जिन रचनाओं को समाज में प्रवाहमान किया वे काव्य कला की ऐसी सीपियाँ हैं; जिनको खोलने पर प्रेम तथा दर्शन के चमकीले मोती मिलते हैं।

सूरदास ने अपने पदों न केवल [illegible] वात्सल्य का वर्णन किया [illegible] दर्शन के अनोखे पुट भी समाहित किए हैं।

सूर का दर्शन परिपाटी का बंधा नहीं है, वह तो सरस प्रवाहित पदों का रस्य दार्शनिक अवलम्ब है; जो सबको दीख नहीं पड़ता।

'भ्रमरगीत सार' की भूमिका में आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं;

" सूर के दर्शन में सूफी रहस्यवाद का पुट तो कतई नहीं है; और न ही कबीर की अक्खड़ता; सूर ने गीता के रूप में दर्शन को प्रश्रय देकर

9

काव्य के स्वरूप में, एवं पद की पंक्तियों में बांधा है।

वास्तव में संयोग श्रृंगार, वात्सल्य के सिद्धहस्त कवि सूरदास अपने काव्य में दर्शन का मजबूत दमखम यथास्थान देकर साहित्य प्रेमियों को चकित कर देते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

(F)

"तुलसी का काव्य समन्वय का काव्य है।"

गोस्वामी तुलसीदास का काव्य समन्वय -कारी है; इस संदर्भ में उनका विश्वप्रसिद्ध महाकाव्य 'रामचरित मानस' दृष्टव्य है; जहाँ पर वे तत्कालीन समाज में व्याप्त वर्ग के बटवारे का एक करने का प्रयास [illegible] है। तुलसी सच्चे अर्थों में एक समन्वयकारी कवि हैं; वे —

- राजा का प्रजा से
- वैष्णव का शैव से
- शैव का शाक्त से
- अद्वैतवाद का विशिष्टाद्वैत से
- ऊँच का नीच से

समन्वय हर जगह अपने पात्रों के माध्यम से यथा राम, सीता, केवट, अहिल्या,

शबरी, जटायु, अनुसूया, काकभुशुंडि आदि के संवाद से कथोपकथन करवाते हैं।

" दैहिक, दैविक, भौतिक तापा,
राम राज्य नहिं काहुहिं व्यापा ॥"

इस प्रकार तुलसी के समान लोकमंगलकारी एवं समन्वयवादी कोई अन्य नहीं हुआ है।

Do not write anything in this portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

(G)

बिहारी का श्रृंगार वर्णन

" मेरी भव बाधा हरो
राधा नागरि सोई,
जा तन की झाई परतें,
श्याम हरित दुति होई।"

जैसे दोहों के साथ शुभारम्भ करते हुए बिहारी ने 'सतसई' की रचना की है; जिसमें —

"बतरस लालच लाल की
मुरली धरी लुकाय
सौंह करै, भौंहन हँसे,
दैन कहि नटि जाए॥"

इस दोहे में श्रृंगार का अद्वितीय रूप प्रस्तुत किया है —

"कहत, नटत, रीझत खिझत
मिलत, खिलति, लजियात
भरे भौन में करत हैं,
नैनन ही सो बात।"

इस प्रकार बिहारी ने श्रृंगार का वास्तविक व मनोग्राही रूप चित्रित किया है; तभी तो लोक प्रसिद्ध है —

सतसैया के दोहरे

ज्यों नाविक के तीर,
देखने में छोटे लगें,
घाव करें गम्भीर ॥[1]

(H)

घनानन्द की काव्यगत विशेषताएं -

प्रेम की पीर की पपीहे के रूप में सुविख्यात घनानन्द का काव्य विरही का काव्य है। जहां वे अपनी आराध्य राधा-रानी के प्रति समर्पित हैं; वहीं और साथ-साथ दरबार में प्रेम में हुए मिथ्या का रूप भी दीख रहता है।

घनानंद की प्रेम अभिव्यंजना अनूठी है; वे 'सुजान' को अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देना चाहते हैं। इनके काव्य में श्रृंगार के वियोग का परिपाक

Do Not Write anything in this Portion

हुआ है;
घनानन्द ने कवित्त के साथ प्रिय वियोग धारा को सिद्ध किया है, इसे देखकर सही प्रतीत होता है कि -

वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान
निकलकर आँखों से चुपचाप
बही होगी कविता अनजान"

(I)

कबीर ने निर्गुण ब्रह्म की भक्ति पर बल दिया -

" पाहन पूजै हरि मिलै
तो मैं पूजूँ पहार।"

जैसे सशक्त दोहों एवं पदों के साथ कबीर ने ईश्वर के निराकार रूप को अभिव्यक्त किया है। कबीर के राम भी

Paper Code

सभी के राम से अलग है —

दसरथ सुत तिहु लोक बखाना,
राम नाम का मरम न जाना ॥

•) कबीर ने ईश्वर को घट-घट वासी तथा ब्रह्म के रूप में स्वीकारा है, जो कथनीय नहीं है —

"अकथ कहानी प्रेम की, जो कछु कही न जाए
गूंगे केरी सरकरा, [illegible] ही मुसकाय ॥"

•) कबीर ने ईश्वर और आत्मा के बीच केवल शरीर का भेद माना है।

"फूटा कुम्भ जल जलहि समाना
सो कथ कहा गियानी।"

कबीर समाज सुधारक संत थे; जिन्होंने अपने विराट अनुभव से संसार को सच्चाई दिखाई —

" मैं कहता आँखों की देखी।"

खण्ड- ब

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर सं० 5

"बिहारी ने गागर मे सागर भर दिया है।"

"सतसैया के दोहरे
ज्यों नाविक के तीर
देखन मे छोटे लगे
घाव करें गम्भीर ॥"

" बिहारी द्वारा रचित बिहारी सतसई के दोहों के लिए यह उक्ति सर्वथा उचित लगती है।

बिहारी के दोहे बहुत छोटे रूप मे भी अनेक अर्थ लिए रहते हैं; उनके शब्दों का चुनाव इस प्रकार बिहारी

सतसई के मंगलाचरण में वे लिखते हैं,

'मेरी भव बाधा हरो,
राधा नागरि सोई,
जा तन की झाई परत
स्याम हरित दुति होई ॥

राधा की वंदना के अलावा इन्होंने कई ऐसे चमत्कारपूर्ण दोहे लिखे जिससे उनके ज्योतिष, गणित, धर्म, औषधि, दर्शन का ज्ञान दृष्टिगत हुआ है; जैसे —

"मनहु नीलमनि शैल पर,
आतप पर्यो प्रभात ॥"

बिहारी राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे; वे उनको प्रसन्न करने के लिए मुक्तक रचनाएं करते रहते थे। जिसके पारितोषिक में इन्हें एक स्वर्ण मुद्रा मिलती थी; शृंगार का परिपाक दृष्टव्य है —

"कहत, हंसत, रीझत खिझत,
मिलत, खिलत लजियात
भरे भौन में करत हैं
नैनन ही सों बात ॥"

चूंकि बिहारी दरबारी एवं आश्रित कवि थे, तो कई बार वे अपनी बात

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

अन्योक्ति के रूप में कहते थे, जैसे -

स्वारथ, सुकृत न श्रम वृथा,
देखि विहंग विचारि,
हे राजा बाज! तू पानि पराये परे;
इन पच्छीनु न मारि ॥

इस प्रकार बिहारी ने राजा जय सिंह अपने ही बन्धु राजाओं को दूसरे प्रभाव से दूर कर संरक्षण की सलाह दी।

बिहारी अपने दोहों की ताकत का एक परिचय तब देते हैं, जब राजा जयसिंह अपनी नवोढ़ा पत्नी के प्रेम में राज्य कार्य भूल जाते हैं; तब बिहारी बिहारी यह दोहा लिखकर भिजवाते हैं -

नहि पराग नहि मधुर मधु,
नहि विकास इहि काल
अली कली हि बिध्यो
तो आगे कौन हवाल।"

राजा को शिक्षा मिली और बिहारी ने अपने सर्जना के प्रयोग से पुनः सिद्ध किया कि वे

Paper Code

'गागर में सागर' भर देने वाले सशक्त कवि हैं, जो दोहों की असंगित परतों के भीतर ज्ञान के गूढ़ खजाने दबाकर गए हैं।

"गागर में सागर भरिके
चले बिहारी लाल
छलक परीं जो गागर तें,
बूँद लपकें बाल,
बाल लपकि जिन बूंदनी को,
किरी सरि गंग समान,
जिन स्पर्श के धन्य भे,
केशव, भूषण, मतिराम।"

खण्ड-स

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर सं० 6

"सूर द्वारा वात्सल्य रस का निर्वाह-

वात्सल्य के सिद्ध कवि सूरदास ने जिन बाल मनोवैज्ञानिक चित्रों को प्रस्तुत किया वे अन्यत्र नहीं दिखते।

वात्सल्य का वर्णन करते हुए सूरदास ने अपने आराध्य श्री कृष्ण और माता यशोदा का चित्रण किया है जो सरस एवं मनोहारी है—

Do Not Write anything in this Portion

→ बाल सुलभ चेष्टा –

किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत,
मनिमय कनक नंद के अंगना
बिम्ब पकिरिबे धावत ॥

→ बाल सुलभ हठ –

मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों ।

→ वात्सल्य की खीझ –

मैया मोरी कबहिं बढ़ैगी चोटी,
किती बार मोहि दूध पियत भइ
या अजहूं है छोटी ।

→ कृष्ण चोरी पकड़े जाने पर कहते हैं –

मैया मोरी मैं नहि माखन खायो,
ख्याल परे है मोसे ग्वाले, गोकुल
बरबस मुख लपटायो ।

→ यशोदा की मातृत्व छवि

कृष्ण को पालने में सोता देखकर नन्द बाबा को बुलाकर लाती हैं, तथा विविध प्रकार से दर्शन पाकर खुश हो जाती हैं, फिर –

Paper Code

" अंचरा तै ढकि सूर प्रभु को
जसुदा दूधि पियावति ।"

⇒ माता - बालक चेष्टा

" तनिक - तनिक भोयु,
[illegible]हिनी ?द मैया "

"यदि सूर ने वात्सल्य को अपनाया है, तो वात्सल्य ने सूर को अपना एकमात्र आश्रय माना है।"

– वियोगी हरि

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

जिनकी कविता से काव्य कला का,
मुग्ध सरोज खिल जाता है;
अंधकार अज्ञान रूप जो,
हरदम दूर भगाता है;
अतिशय आलोकित है सारा
वात्सल्य खण्ड जिनके द्वारा
हे महाकवि श्री सूरदास
स्वीकार करो तुम नमन हमारा।
– स्वरचित

है प्रकाश जिसका वह दर्शक
काव्य सदा ही मनोहरी
है जिसका सम्मान सर्वदा
साहित्य विधि में अति भारी
कविता रूपी नभ में अतिशय
चमक रहा है जो तारा
हे महाकवि तुम सूरदास
स्वीकार करो प्रभु नमन हमारा॥

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Room No. - 21
Coby - 06

24